प्रश्नः

''ज़्या सभी कलीसियाओं के लोग मसीही हैं?''

उज़रः

कहा जाता है कि ''सब कलीसियाओं के लोग मसीही हैं।'' यदि यह बाइबल का कोई पद होता तो इस पर कोई विवाद नहीं होना था। परन्तु परमेश्वर के अविनाशी वचन में ऐसी कोई बात नहीं है, इसलिए मनुष्य की नाशवान बातों का परखा जाना आवश्यक है (1 थिस्सलुनीकियों 5:21)।

यदि आपने यह निश्चय कर लिया है कि आप इस बात को फिर से परखने को तैयार नहीं हैं कि सब कलीसियाओं के लोग मसीही हैं या नहीं, तो आपका मन सही नहीं है। परमेश्वर का वचन हमें कुछ लोगों के विषय में बताता है जिन्होंने परमेश्वर की प्रेरणा प्राप्त स्तिफनुस नामक प्रचारक की बातें सुनीं, लेकिन उन्होंने विश्वास नहीं किया। इन लोगों ने प्रचारक की बात को परखने से इन्कार कर दिया, और ''उस पर दांत पीसने लगे।'' फिर ''उन्होंने बड़े शज़्द से चिल्लाकर कान बंद कर लिए, और चिज़ होकर उस पर झपटे और उसे नगर के बाहर निकालकर पत्थरवाह करने लगे ...'' (प्रेरितों 7:54-58)। उनके मन साफ़ नहीं थे और यदि आप परमेश्वर के वचन का अध्ययन करने से इन्कार करते हैं तो आपके मन भी उनकी तरह साफ नहीं होंगे।

परमेश्वर हमें लोगों के एक और समूह के बारे में बताता है जिन्होंने, परमेश्वर की प्रेरणा प्राप्त प्रचारक को सुनकर उसकी बात पर विश्वास नहीं किया था, ''उन्होंने बड़ी लालसा से वचन ग्रहण किया, और प्रतिदिन पवित्र शास्त्रों में ढूंढ़ते रहे कि ये बातें यों ही हैं, कि नहीं'' (प्रेरितों 17:11)। इन लोगों के मन साफ़ थे।

''मसीही'' शज़्द का इस्तेमाल करते हुए हम ज़्या कह रहे होते हैं? बहुत से लोगों का जवाब होता है, ''एक मसीही बड़ा भला आदमी होता है।'' कोई दूसरा कह सकता है, ''मेरी पड़ोसिन किसी कलीसिया की सदस्य तो नहीं है, पर वह बहुत अच्छी पड़ोसी है। वह बीमारों की सहायता करती है और इस नगर में सब से अच्छी मसीही स्त्रियों में उसका नाम आता है।'' ज़्या सब कलीसियाओं के लोग मसीही हैं? निश्चित रूप में सामान्य अर्थ में,

यदि ''मसीही'' से आपका भाव अपने पड़ोसियों के प्रति दयालु और विचारवान होना है तो इसका अर्थ यही है। ''मसीही'' की उस परिभाषा के अनुसार सब कलीसियाओं के लोग मसीही ही हैं, सब कलीसियाओं के बाहर के लोग मसीही हैं और मसीह में विश्वास न करने वाले भी मसीही ही हैं। यदि इस परिभाषा को मान लिया जाए तो दयालु, उदार-हृदय मुस्लिम और बौद्ध लोग भी मसीही ही हैं।

दूसरे लोग कह सकते हैं, ''मसीही व्यक्ति भला होने के साथ-साथ मसीह में विश्वास करने वाला भी होता है।'' यदि एक मसीही की परिभाषा दूसरी वाली है, तो क्या सब कलीसियाओं के लोग मसीही हैं। एकदम हमें यह कहना पड़ेगा, ''नहीं क्योंकि यीशु को परमेश्वर का पुत्र न मानने वाली और यहूदी कलीसियाएं मसीह में विश्वास की शिक्षा नहीं देतीं।'' इसलिए यदि मसीही बनने के लिए मसीह में विश्वास करना आवश्यक है तो यीशु को परमेश्वर का पुत्र न मानने वाली कलीसिया या यहूदी कलीसिया, उनमें कोई भी मसीही नहीं।

यदि आप बाइबल को देखें तो आपको पता चल जाएगा कि मसीही बनने के लिए केवल विश्वास ही जरूरी नहीं है। मसीह में विश्वास करने वालों को ''परमेश्वर की संतान'' अर्थात मसीही बनने का अधिकार मिल जाता है, लेकिन जब तक वे विश्वास नहीं करते तब तक वे मसीही नहीं कहला सकते (यूहन्ना 1:12; 12:42)। बाइबल हमें उन हज़ारों लोगों के बारे में बताती है जिन्होंने यीशु में विश्वास किया (प्रेरितों 2:36-47) परन्तु उनका उद्धार नहीं हुआ। मन फिराने और बपतिस्मा लेने के बिना वे मसीही नहीं बने। परमेश्वर ने विश्वास करने वालों, मन फिराने वालों और बपतिस्मा लेने वालों का उद्धार किया था और चेलों को भी, ''मसीही'' कहा जाता था (प्रेरितों 11:26; 26:28; देखिए याकूब 2:7; 1 पतरस 4:16; देखिए याकूब 2:7)। क्योंकि पवित्र शास्त्र परमेश्वर की ओर से यह सिद्ध करता है कि एक मसीही विश्वास करने वाला, पश्चाज़ापी, डुबकी लिया हुआ व्यक्ति है तो क्या सब कलीसियाओं के लोग मसीही हैं ?

कई कलीसियाओं में हज़ारों लोग ऐसे हैं जो विश्वास के द्वारा नहीं बल्कि बच्चों के रूप में आए थे अर्थात उन्हें उन कलीसियाओं में अपने माता-पिता के कारण प्रवेश मिला था। क्या बाइबल के अनुसार वे मसीही हैं ? उन कलीसियाओं में उनका आना मन फिराए बिना हुआ, क्योंकि उन्हें इसका भी पता नहीं था। क्या वे बाइबल की परिभाषा के अनुसार मसीही हैं ? हज़ारों लोग ऐसे हैं जो डुबकी के बजाय छिड़काव के द्वारा उन कलीसियाओं में आए (रोमियों 6:4; कुलुस्सियों 2:12)। क्या वे बिल्कुल वैसे ही मसीही हैं जैसे परमेश्वर अपने वचन में मसीही होने के लिए कहता है ? हज़ारों लोग ऐसे भी हैं जो डुबकी लेकर तो आए हैं लेकिन मसीही बनने की शिक्षा (''अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले,'' प्रेरितों 2:38; ''अपने पाप धो डाल,'' प्रेरितों 22:16) उन्हें किसी ने नहीं दी। उन्हें बपतिस्मा लेने के लिए कहा जाता है क्योंकि वे पहले से ही मसीही होते हैं। उन्हें बताया जाता है कि उनके पाप बिना बपतिस्मा लिए ही क्षमा हो जाते हैं। क्या वे बिल्कुल वैसे ही मसीही हैं जैसे परमेश्वर अपनी पुस्तक में मसीही की परिभाषा बताता है ?

वे भले और नैतिक लोग हैं। वे यीशु में विश्वास रखते हैं और उसके लिए कठिन परिश्रम करते हैं। परन्तु, ज़्या वे बाइबल के अर्थ के अनुसार मसीही हैं? यदि बाइबल के अर्थ में नहीं तो फिर किस अर्थ में हैं? लोगों को मसीही बनने के लिए प्रभु की बात को बदलने का अधिकार किसने दिया है?

बाइबल के अर्थ में वे लोग मसीही हैं जिन्होंने प्रेरितों 2:38 की आज्ञा मानी है, फिर किसी डिनोमिनेशन या साज़्प्रदायिक कलीसिया में शामिल हो गए हैं। ज़्या वे मसीही हैं? हां, परन्तु वे गलत जगह चले गए हैं। परमेश्वर हमें बताता है कि मसीही लोगों का धड़ों में बंटना गलत है (1 कुरिन्थियों 1:10-13)। वे परमेश्वर के लोग तो हैं, परन्तु भयानक गलती कर रहे हैं।

बाइबल की परिभाषा के अनुसार वे भी मसीही हैं जिन्होंने अपनी मर्ज़ी से, पवित्र शास्त्र के अधिकार के बिना, आराधना में ज़्वायरें और गानों के साथ बाजों को जोड़ लिया है। ज़्या वे मसीही हैं? हां, परन्तु उन्होंने मण्डली द्वारा मिलकर गीत गाने को (इफिसियों 5:19; इब्रानियों 13:15) प्रदर्शन का रूप दे दिया है।

इसके अलावा वे लोग भी बाइबल की परिभाषा के अनुसार मसीही हैं जो परमेश्वर के धन्यकार्य के प्रति उदासीन हो गए हैं। ज़्या वे मसीही हैं? हां, परन्तु परमेश्वर कहता है, ''मैं तेरे कामों को जानता हूं कि तू न तो ठंडा है और न गर्म: भला होता कि तू ठंडा या गर्म होता। सो इसलिए कि तू गुनगुना है, और न ठंडा है और न गर्म, मैं तुझे अपने मुंह में से उगलने पर हूं'' (प्रकाशितवाज़्य 3:15, 16)। नीम गर्म मसीही प्रभु को बीमार कर देते हैं।

पवित्र शास्त्र के अनुसार इन स्थितियों का होना गलत है और इन पर ध्यान दिया जाना आवश्यक है। (1) कलीसिया के सदस्यों को जो उस प्रकार मसीही नहीं हैं जैसे बाइबल बताती है कि मसीही लोगों को होना चाहिए, तो चाहिए कि वे वैसे ही मसीही बन जाएं। (2) कलीसिया के सदस्यों को, जो बाइबल की परिभाषा के अनुसार मसीही हैं, चाहिए कि वे मनुष्य की बनाई हुई परज़्पराओं का त्याग कर बाइबल में बताई आराधना की सादगी की ओर लौट आएं। (3) बाइबल की परिभाषा के अनुसार मसीही कहलाने वाले कलीसिया के सदस्य जो नीम गर्म मसीही बन गए हैं उन्हें अपने ''पहले प्रेम'' की ओर लौट आना चाहिए (प्रकाशितवाज़्य 2:4)।

परमेश्वर का अद्भुत अनुग्रह[1]

मनुष्य के पाप की भयानकता युद्ध, अपराध, लालच, घृणा और स्वार्थ में पता चलती है; परन्तु कलवरी के क्रूर क्रूस में यह बहुत ही साफ़ दिखाई देती है। परमेश्वर का अद्भुत अनुग्रह अर्थात उसकी वह कृपा जिसे कमाया नहीं जा सकता, ही हमारे उद्धार की एकमात्र आशा है। परमेश्वर का धन्यवाद हो कि उसने हम पर अपनी वह दया दिखाना उचित समझा जिसके हम योग्य नहीं थे! ''ज़्योंकि परमेश्वर का वह अनुग्रह प्रगट है, जो सब मनुष्यों के उद्धार का कारण है'' (तीतुस 2:11)। यदि परमेश्वर पूरी तरह से न्याय की मांग करता तो हम में से किसी का भी उद्धार नहीं हो सकता था!

परमेश्वर ने जगत की सृष्टि से भी पहले, मनुष्य के उद्धार की योजना बना ली थी। उसने इब्राहीम के साथ प्रतिज्ञा की कि वह उसके वंश के द्वारा संसार को आशीष देगा और यह प्रतिज्ञा मसीह के क्रूस की आशिषों में पूर्ण हुई। परमेश्वर का पुत्र हमारे पापों को उठाने वाला, हमारे पापों का बलिदान, और हमारे लिए प्रायश्चित बन गया।

परमेश्वर के अनुग्रह को पाना पूरी तरह से विश्वास के द्वारा मसीह को अपना उद्धारकर्ज़ा मानने पर निर्भर करता है। इस विश्वास में भरोसा, विश्वास करना, निर्भरता व आज्ञा मानना शामिल हैं। इसमें हमारी किसी योग्यता की आवश्यकता नहीं है। हम अपने प्रभु की हर बात को मानने और उसके सामने झुकने के लिए अर्थात पाप से मुड़ने, मसीह में बपतिस्मा लेने, दूसरों तक प्रेम से पहुंचने और सारे संसार में सुसमाचार का प्रचार करने के लिए झुक सकते हैं और हमें झुकना भी चाहिए। हम जो कुछ भी कर सकते हैं उसके बावजूद, हम उद्धार की एक बात को भी कमा नहीं सकते। ''ज़्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुज़्हारा उद्धार हुआ है, और यह तुज़्हारी ओर से नहीं, बरन परमेश्वर का दान है। और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे'' (इफिसियों 2:8, 9)।

पाद टिप्पणी

[1]एफ़. डज़्ल्यू. मैटोज़्स, ''द अमेज़िंग ग्रेस ऑफ़ गॉड,'' *20थ सैंचुरी क्रिश्चियन* 14 (मई 1952): 3–5 से लिया गया।